शान दरबार की | by Mukesh Bagda

ऐ श्याम तेरे दर का, सारे जहाँ में चर्चा
हारों को निभाता है, सीने से लगाता है
शान दरबार की अनोखी है..अनोखी है
पूरी मन की मुराद होती है

हार कर आ गया शरण तेरी
तुमने अपनाने में ना की देरी
सर पे जो मोरछड़ी लहराई
मन की मुरझाई काली मुस्काई
जिसने विश्वास किया है तुम पर
लाज उसकी कभी ना खोती है

वक़्त पे जब ना कोई काम आये
साथी बन कर के मेरा श्याम आये
प्रीत साँची निभाने वाला है
देव कलयुग का ये निराला है
उसकी तक़दीर का तो क्या कहना
जिसके दिल में जली ये ज्योति है

मुझपे उपकार अनेको इसके
जन्मो जन्मो ना उतरेंगे कर्ज़े
मुझे बरसो से यही पाल रहा
मेरा घर बार ये संभाल रहा
देख मन मौजी इसकी दिलदारी
मेरी आँखों से बहे मोती है

https://bhaktivandana.com/lyrics/%e0%a4%b6%e0%a4%be%e0%a4%a8-%e0%a4%a6%e0%a4%b0%e0%a4%ac%e0%a4%be%e0%a4%b0-%e0%a4%95%e0%a5%80-by-mukesh-bagda/